M.A. Examination, 2019
Semester-IV
Hindi
Course : XVI (Special Paper)
(जयशंकर प्रसाद)

Time : 3 Hours **Full Marks : 40**

Questions are of value as indicated in the margin

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 2×8=16

क) जलता है यह जीवन-पतंग
जीवन कितना? अति लघु क्षण,
ये शलभ पुंज से कण-कण,
तृष्णा वह अनलशिखा बन–
दिखलाती रक्तिम यौवन।
जलने की क्यों न उठे उमंग?

ख) यह कसक अरे आँसू सह जा।
बनकर विनम्र अभिमान मुझे
मेरा अस्तित्व बता, रह जा।
बन प्रेम छलक कोने कोने
अपनी नीरव गाथा कह जा।
करूणा बन दुखिया वसुधा पर
शीतलता फैलाता बह जा।

ग) मनुष्य व्यर्थ महत्व की आकांक्षा में मरता है; अपनी नीची, किन्तु सुदृढ़ परिस्थिति में उसे संतोष नहीं होता, नीचे से ऊँचे चढ़ना ही चाहता है, चाहे गिरे तो भी क्या?

घ) किसने ऐसे सुकुमार फुल को कष्ट देने के लिए निर्दयता की सृष्टि की? आह री नियति! तब इसको लेकर मुझे घर-बारी बनना पड़ेगा क्या? दुर्भाग्य! जिसे मैंने कभी सोचा भी न था।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए– 2×12=24

क) 'कंकाल' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

ख) पठित निबन्धों के आधार पर जयशंकर प्रसाद की निबन्ध-कला पर विचार कीजिए।

ग) अजातशत्रु का चरित्र-चित्रण कीजिए।

घ) "इतिहास की एक नाजुक घड़ी का चित्रण करने वाला नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' वस्तुतः ऐतिहासिक नाटक होते हुए भी समस्या नाटक है।" उक्त कथन के आलोक में 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की समीक्षा कीजिए।